International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 358-359

वाल्मीकि रामायण की ऐतिहासिकता

डॉ० इन्दुमती सिंह

पूर्व शोध छात्रा, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

लौकिक संस्कृत साहित्य का आदि काव्य वाल्मीकीय रामायण एवं श्री वेद व्यास प्रणीत महाभारत इन दोनों महाकाव्यों को आर्ष काव्य के साथ–साथ ऐतिहासिक महाकाव्य की संज्ञा दी जाती है। श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण आदि महाकाव्य होने के कारण महाभारतादि काव्यों तथा देशी एवं विदेशी टूपिकस (महाकाव्यों) का उपजीव्य एवं उत्स होने के साथ–साथ उत्प्रेरक भी है।

यह महाकाव्य भारतीय सनातन धर्मस्वरूपों एवं भारतीय वर्णाश्रम व्यवस्था एवं सदाचार सद्विचार को व्यवस्थित करते हुए, आदर्श संयुक्त परिवार तथा पारिवारिक सम्बन्धों के निर्वाह में त्याग, प्रेम, सहिष्णुता के साथ–साथ सत्य एवं करुणा की स्थापना करता है। संस्कार, ज्ञान, भक्ति एवं मैत्री के आदर्श स्वरूपों का प्रतिपादन करने वाला यह महाकाव्य केवल भारत वर्ष में ही नहीं बल्कि पड़ोसी समुद्र पार के राष्ट्रों से रामचरित का स्थापन करने वाला है।

इस महाकाव्य की ऐतिहासिकता को पाश्चात्य से लेकर प्राच्य (भारत) तक के विद्वान अपनी–अपनी शक्ति एवं दृष्टि के अनुसार प्रतिपादित करते हैं। *जिन्ह के रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी*।[1] इस महाकाव्य के काल को अपनी–अपनी संस्कृति के विकास के अनुसार प्रस्तुत करते हैं। – *'निज निज मति अनुरुपये मखी उड़ई अकास'* सभी विद्वतजन अपनी समता के अनुसार ऐतिहासिकता को प्रमाणित करते हैं।

रामायण के विकास का इतिहास श्रौत कर्मकाण्ड के काल सम्बद्ध है। यज्ञीय कर्मकाण्ड ही त्रेता युग का युग धर्म है। यज्ञीय संख्य क्रम के प्रसाद से हमारे चतुर्व्यूहावतार महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अवतरण इस धराधाम पर होता है। देशकाल की पता के आधार पर विभिन्न संस्करणों में कुछ पाठ–भेद भी प्राप्त है किन्तु कथा या चरित भेद नहीं है।

रामायण रचना काल की पूर्व सीमा का निर्देश केवल भारतीय परम्परा द्वारा ही निर्धारित किया जा सकता है। पाश्चात्य संस्कृति का विकास ही ईस्वीय सन् के कुछ पूर्व से ही विकसित है अतः पाश्चात्य विद्वान जो भारतीय संस्कृति एवं आर्ष ग्रन्थों का निर्धारण भी इसी के इर्द–गिर्द ही निर्धारित करने में सक्षम हैं। इसी कारण उन्होंने राम की ऐतिहासिकता पर एक सन्देहास्पद दृष्टिकोण प्रस्तुत किये हैं। पाश्चात्य परम्परा से प्रभावित एवं उसी में पले हुए भारतीय विद्वान की अपनी दृष्टि को दूषित कर उसी के अनुसार अपनी विद्वत्ता के अहं को पुष्ट करते हैं। इन दृष्टिहीन एवं सनातन संस्कृति की परम्परा से अनभिज्ञ विद्वान के बारे में अधिक कुछ कहना भी केवल पिष्टपेषण मात्र है। डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास में रामायण एवं वैदिककाल के विषय में लाखों वर्षों के मतभेद की चर्चा किया है। निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने कुछ मतों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया है। वरदाचार्य ने अपने संस्कृत सा. के इतिहास पृष्ठ 66–67 पर इस प्रकार उल्लेख किया है – राम त्रेता युग में हुए। त्रेतायुग ईसा से 8 लाख 67 हजार एक सौ वर्ष पूर्व समाप्त हुआ था। आदि कवि वाल्मीकि श्रीराम के समकालीन थे, अतः रामायण की रचना भी त्रेतायुगीन ही है।

भारतीय काल गणना में 12 हजार दिव्य वर्षों की एक चतुर्युगी होती है। ब्रह्माजी के एक दिन का नाम कल्प है। एक कल्प में 14 मनवन्तर का काल व्यतीत होता है। इस श्वेत वाराहकाव्य की सृष्टि का आरम्भ 1955885118 वर्ष पूर्व हुआ। इस काल गणना का 28वाँ कलियुग है।

गुगल में स्थापित गणना के अनुसार एक करोड़ एक्यासी लाख एक सौ दस वर्ष होता है, अतः इतने ही वर्ष पूर्व रामजी की विद्यमानता थी।

नासा के वैज्ञानिकों द्वारा भी रामेश्वरम सेतु के चट्टानों का अध्ययन कर भारतीय काल गणना को ही पुष्ट किया है। उनके अनुमान के अनुसार भी रामायण काल आज से लगभग 90 लाख वर्ष पूर्व ही निर्धारित किया है।

महाभारत वन पर्व अध्याय 273 से 292 तक रामोपारम्भ पर्व में वाल्मीकि जी द्वारा वर्णित पूरी रामायण वर्णित है। वाल्मीकि जी की प्राचीनता का प्रमुख प्रमाण यही है।

जगत जननी माँ सीता जी के शुद्धता समर्थन के प्रसंग में आदि कवि वाल्मीकि ने श्रीराम से अपना परिचय देते हुए कहा है –

प्राचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघव नन्दन।
न स्मराम्यनृतं वाक्यमिक्षौ तु तव पुत्रकौ।।[2]

एक इसाई पादरी के बेटे लार्ड मैकाले ने खुलेआम घोषित किया था – ''यदि किसी राष्ट्र को नष्ट करना हो तो सर्वप्रथम उसका इतिहास नष्ट करो, राष्ट्र अपने आप खत्म हो जायेगा।''

भारत का प्रत्येक इतिहासकार लार्ड मैकाले की इस साजिश से भलीभाँति अवगत है, तथापि अंग्रेजों के कदाशयता पूर्वक (कुटिल राजनीतिक कुचक्र द्वारा लिखित इतिहास को ही प्रमाण के रूप में मानकर भारतीय वाङगमय को अप्रमाणिक करार देने में अभी तक अपने को अलग नहीं कर पाया है। सौभाग्य से वर्तमान भारत सरकार कुछ राष्ट्रवादी इतिहासकारों की एक टीम गठित कर अपने प्राचीनतम इतिहास की प्रामाणिकता को जोरदार शब्दों में सप्रमाण प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया है, अस्तु सौभाग्यवश यदि हमारे उज्जवल अतीत का अन्वेषण यदि हो जायेगा तो भारत अपने विश्व गुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित हो जायेगा –

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशात् अग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्व मानवा।।

वेदों में भी सूत्रात्मक रूप से रामायण के पात्रों एवं रामायण कालीन नगरों तथा व्यवस्थाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

अथर्व वेद काण्ड 10 – ब्रह्म प्रकाशन सूक्त (सूक्त – 2) के मन्त्र 31 में अयोध्या का वर्णन इस प्रकार है –

अष्ट चक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृत्तः।।

इस महल में श्रीरामजी के कथन की भी पुष्टि होती है –

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

एक व्याख्याकार ने अयोध्या की व्याख्या में लिखा है –

'ईश्वरावास रूपायोध्यानगरी तु मर्त्यानाम् अयोध्या'

ऋग्वेद चतुर्थ मण्डल सूक्त 5 के मन्त्र 6–7 तथा अथर्ववेद काण्ड 3, सूक्त 17, मन्त्र 4, 8 एवं 9 में 'सीता' पद का उल्लेख है।
संसार के सारे ज्ञान–विज्ञान एवं पंथ सम्प्रदाय तथा सभी धर्मों का उत्स वेदों में ही संकेत रूप से प्राप्त है। कुरान वर्णित एकेश्वरवाद की मूल अवधारणा भी मन्त्र द्रष्टा ऋषियों के मन्त्रों में द्रष्टव्य है (ऋग्वेद दशम मन्त्र सूक्त 82 मन्त्र – 3 एवं यजु. अ. 17 मन्त्र 27)
बाइबिल में वर्णित जल प्रलय की कथा शतपथ ब्राह्मण में वर्णित जल प्रलय के मत्स्यावतार की गाथा का संस्करण मात्र है।
नास्तिक से लेकर आस्तीक सभी दर्शनों का उत्स वेदों से प्रस्तुत किया गया है। वाल्मीकि राम कथा का भी संकेत वेदों से अवतरित है।
वाल्मीकीय रामायण की प्राचीनता के सन्दर्भ में राजतरंगिणी की एक कथा का उल्लेख भी अनिवार्य है – रामायण में कैलास के समीप गुह्यकों के रहने की बात कही गयी है। सुग्रीव ने उत्तर दिशा में माता सीता की खोज में गये वानरों से गुह्यकों का उल्लेख किया है। वाल्मीकि रामायण कि.कि.का. सर्ग 43 – श्लोक 3 में उल्लेख आता है।
वहाँ यक्षों के स्वामी विश्रवा कुमार कुवेर जो विश्व वन्दनीय हैं, धनदाता हैं वह यक्षों के साथ (गुह्यको) निवास करते हैं।

आश्रमानि तथा नद्यश्चक्रु स्तीर्थान्यनेकशः।
गन्धर्वाप्सरसो यक्षः शैलेन्द्राश्च सगुह्यकाः।।[3]

इस कथा सन्दर्भ से भी राजतरंगिणी से पूर्व की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।
डॉ. विन्टरनित्स ने अपने पूर्ववर्ती प्रो. वेवर तथा माकोवी आदि आलोचकों के मतों का संग्रह कर मौलिक एवं प्रक्षिप्त अंशों की सारपूर्ण विवेचना दिया है (इण्डियन लिटरेचर, वॉल्यूम 1–1927, पृष्ठ 495–500)
पश्चात्य विद्वानों के मत भी भिन्न–भिन्न हैं, क्योंकि वे दुर्भाग्यपूर्ण है। गोरेसिपो– 1200 ई.पू., श्लेगल – 1100 ई.पू., शाकोवी 800–500 ई. पू. कामिल बुल्के 600 ई.पू., इसी प्रकार 500 से 200 ई.पू. के बीच मैकडानेल, काशी प्रसाद जायसवाल, जयचन्द विद्यासागर विन्टरनित्स आदि में भी समय मीमांसा किया है।
स्वामी करपात्री जी ने रामायण मीमांसा में भारतीय राम गाथाओं एवं विदेशी रामगाथाओं बौद्ध एवं जैन राम गाथाओं की विडम्बनाओं असंगतियों एवं मतभेदों का निराकरण कर रामायण की प्राचीन सनातन गाथा एवं परम्पराओं की पुनर्स्थापना किया है।
स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने भी पुरातात्विक अन्वेषण के रूप में मृण्मय मूर्तियों के 42 दृश्यों का संग्रह किया, इन दृश्यों से भी रामायण की प्राचीनता एवं प्रामाणिकता पुष्ट होती है।

त्रेता युगे चतुर्विंशे रावणः तपसः क्षयात्।
श्रामं दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमेयिवान्।।[4]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रा.च.मा. वा.का. दोहा – 241
2. वाल्मीकि रा.मा.उ.का. सर्ग – 47
3. नीलमत पुराण
4. वायु पुराण – 70–48